माननीय राज्यपाल महोदय श्री राम नरेश यादव का महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट के पंचम दीक्षान्त समारोह में उद्बोधन

स्थान: चित्रकूट,सतना दिनांक: 18 फरवरी,2014 समय:

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में पधारे सभी साधु-सन्तों, कृषि वैज्ञानिक, कुलपति प्रो. नरेश चन्द्र गौतम,प्रबन्ध मण्डल और विद्यापरिषद के माननीय सदस्यगण, पदाधिकारी, शिक्षक, अधिकारी-कर्मचारी और गणमान्य नागरिकों, स्थानीय प्रशासन के प्रतिनिधिगण और छात्र-छात्राओं को बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मुझे प्रसन्नता हो रही है कि देश को अपनी समर्पित सेवाओं से गौरव प्रदान करने वाले ख्यातिलब्ध वैज्ञानिक भारतीय कृषि में दैदीप्यमान्य नक्षत्र की तरह शुशोभित प्रो. अयप्पन जी को उनके विलक्षण योगदान के लिए डी.एस-सी. की मानद् उपाधि से विभूषित कर रहे है। इस अलंकरण से विश्वविद्यालय स्वयं गौरव का अनुभव कर रहा है। मैं प्रो. अयप्पयन को बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

दीक्षान्त पर्व किसी भी विश्वविद्यालय के लिए सबसे बड़ा शैक्षाणिक उत्सव है। जिन छात्रों ने परिश्रमपूर्वक शोध-उपधियाँ अर्जित की है उनके शोध ग्रामीण क्षेत्र की बेहतरी के लिए उपयोगी साबित होगें। जिन छात्रों ने विशेष योग्यता के आधार पर पदक अर्जिक किये है,वे बधाई के पात्र हैं। मैं उनके अभिभावकों को भी हार्दिक बधाई देता हूँ। जो स्नातक उपाधियाँ प्राप्त कर रहे हैं। उन्हें मेरी शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि इस विश्वविद्यालय से जो शिक्षा आपने ग्रहण की वह समाज और देश के लिए कल्याणकारी और शुभ होगी।

आप से सभी को अपेक्षाएं हैं कि आप इन उपाधियों का उपयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ग्रामों की बेहतरी के लिए करेगें। देश के उन्नयन एवं विकास में अपनी भूमिका निभायेगें। उपधि की प्रमाणिकता सिद्ध करेंगे और जीवन को सार्थक बनायेंगे।

कृषि और ऋषि भारतीय संस्कृति के केन्द्र बिन्दु रहें हैं। राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख द्वारा चित्रकूट में ग्रामोदय विश्वविद्यालय की स्थापना का लक्ष्य भी ग्राम -उन्मुख शिक्षा एवं कृषि का विकास था। उनका मानना था कि विश्वविद्यालय की स्थापना से बुन्देलखण्ड़ के इस पिछड़े और

उपेक्षित क्षेत्र का सर्वांगीण विकास किया जा सकेगा। आप सभी के प्रयासों से विश्वविद्यालय में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। अल्प समय में ही अधोसंरचना के विकास और गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने अनेक कदम उठाये हैं। विश्वविद्यालय ने अपने आर्थिक संसाधनों को बढ़ाने की दृष्टि से उल्लेखनीय पहल की है। विभिन्न परियोजनायें प्रेषित की गई है। इन प्रयासों के दूरगामी और सफल परिणाम होंगे।

विश्वविद्यालय के प्रबन्ध मण्ड़ल की 46वीं बैठक में अपनी अभिलाषा जाहिर करते हुए मैंने कहा था कि विश्वविद्यालय अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा का विनियोग ग्रामीण विकास और ग्रामों के उत्थान के लिए करे। मुझे विश्वास है कि कुलपति जी के कुशल नेतृत्व में एक रचनात्मक वातावरण बनेगा।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में उच्च शिक्षा से सम्बद्ध प्रत्ययों के प्रचलित अर्थ और आयाम बदल रहे हैं। यह प्रतिस्पर्धा का युग है। हमें समय के साथ अपनी शिक्षा की सार्थकता साबित करनी होगी,तभी हम सफल हो सकते हैं। आपको अपनी पढ़ाई डिग्री के लिए नहीं बल्कि जीवन में सफल होने की दृष्टि से करना चाहिए। आज के नौजवानों के सामने अनेक चुनौतियां है, इन चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करना जरूरी है। आधुनिक जीवनशैली के प्रलोभन भी युवावर्ग के सामने है, इनसे बचकर एकाग्रचित्त होकर पढ़ना और सफलता हासिल करना आपका एक मात्र ध्येय होना चाहिए।

विश्वविद्यालय के शिक्षको से भी मेरी अपेक्षाएँ हैं। छात्र बहुत उम्मीद से विश्वविद्यालय में आता है, उसे समाज की जरूरतों और व्यवसाय की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना शिक्षकों का काम है। शिक्षकों का समर्पण ही छात्रों में गुणवत्ता और निखार ला सकता है। शिक्षको से मेरी अपेक्षा है कि वे अध्यापन को केवल एक व्यवसाय न मानकर समर्पित जीवन-शैली का एक अंग मानें। इससे विश्वविद्यालय परिसरों का वातावरण प्रतिद्वन्दिता से मुक्त होकर रचनात्मकता से ओत-प्रोत होगा।

अभिभावकों से मैं कहना चाहता हूं कि वे अपने बच्चों से उन अपेक्षाओं पर खरे उतरने की उम्मीद न रखें जिसके लिए जरूरी क्षमता बच्चें में न हो। प्रत्येक बच्चे में परमात्मा ने कुछ न कुछ हुनर दिया है। इसे तराशना जरूरी है।

यह भारत का प्रथम ग्रामीण विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य ग्रामीण भारत के शिक्षा,शोध एवं प्रसार कार्यो से प्रगति और विकास की ओर अग्रसर करना है। विश्वविद्यालय के लिए यह आत्मिक गौरव की अनुभूति का विषय है कि विश्वविद्यालय ने अपने कार्यक्रमों एंव उपलब्धियों से विगत दो दशकों के अधिक के समय में अपने योगदान से उच्चशिक्षा के परिदृश्य में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित किया है। यहां से उपधि प्राप्तकर छात्रों ने अपनी उपलब्धि से देश और प्रदेश को गौरवान्वित किया है। यहां के नवाचारों और शैक्षणिक व्यवस्थाओं को अपनाने में अनेक विश्वविद्यालयों ने रूचि प्रदर्शित की है जिसका लाभ दोनों पक्षों को मिल रहा है। महात्मा गांधी के ग्राम विकास का दर्शन ग्रामोदय विश्वविद्यालय का शाश्वत प्रेरणा स्त्रोत है। विश्वविद्यालय के कार्यों में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए शिक्षा एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान करना सबसे प्रमुख है। विश्वविद्यालय ग्रामीण विकास के समस्त आयामों पर उच्च शिक्षा,शोध,प्रशिक्षण एवं प्रसार द्वारा संस्कार-युक्त युवा शक्ति तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व आधारित उच्च शिक्षा से युवा पीढ़ी में ग्राम जीवन की समझ और समस्याओं को हल करने की संवेदनशीलता विकसित करने हेतु विश्वविद्यालय सतत् प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक प्रविधियों को विकसित करना एवं सम्पूर्ण ग्राम विकास हेतु क्रियात्मक शोध को बल देना और जन शिक्षण के लोक व्यापीकरण से ग्रामीण भारत के सशक्तीकरण में योगदान करना है। इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विश्वविद्यालय परिवार सतत् प्रयत्नशील है।

आज के दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. अयप्पन देश में कृषि,शिक्षा और अनुसंधान के सर्वोच्च निकाय के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हैं। कृषि अनुसंधान परिषद और ग्रामोदय विश्वविद्यालय ग्राम विकास की धुरी पर अवलम्बित है। भविष्य में दोनों निकाय साझा परियोजनाऐं संचालन की सम्भावनाऐं तलाश सकते हैं। परिषद विश्वविद्यालय में विभिन्न योजनाओं का संचालन कर इस क्षेत्र में नई तकनीक के उपयोग से गांव की आर्थिक दशा और दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है। परिषद की विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से विश्वविद्यालय को अर्थिक संसाधन उपलब्ध हो सकते हैं। जिससे विश्वविद्यालय कृषि एवं ग्रामीण विकास दोनों ही आयामों पर बेहतर नतीजे दे सकेगा।

विश्वविद्यालय थिन्क ग्लोबली, एक्ट लोकली के सिद्धान्त पर चित्रकूट के आसपास की सांस्कृतिक,प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अनेक कार्य कर रहा है। इस क्रम में इस .क्षेत्र में उपलब्ध अतिदुर्लभ औषिधीय पौधे के संरक्षण और संपोषण का महत्वपूर्ण कार्य विश्वविद्यालय ने अपने हाथ में लिया है। अपनी आकांक्षाओं को एक कार्य योजना में ढालकर विश्वविद्यालय अतिशीघ्र विद्यार्थियों एवं विशेषज्ञों की सहभागिता से इस दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु तैयार है। मंदाकिनी नदी के जल की गुणवत्ता मापन,स्वच्छता और प्रदूषण रहित बनाये रखने की दिशा में अनेक संस्थाओं के साथ सहभागी है।

विश्वविद्यालय का वातावरण और परिसर देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इस ईको फ्रेन्ड़ली वातावरण में आप निश्चिन्त,निर्भय और प्रसन्न होकर अपनी पढ़ाई पूरी कर सकते हैं। शैक्षणिक गतिविधियों को निर्धारित समय सीमा में पूर्ण करने में ग्रामोदय विश्वविद्यालय ने जो स्थान पूरे प्रदेश में अर्जित किया है वह सहज गौरवान्वित करता है। मुझे विश्वास है कि आगे भी आप समय पालन की मिसाल प्रस्तुत करते रहेंगे। विगत दो वर्षों में छात्र सुविधाओं में भी वांछित विस्तार और सुधार हुआ है।

शिक्षा के आलोक को गांव-गांव तक पहुंचाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय दूरवर्ती अध्ययन केन्द्रों और स्वाध्यायी परीक्षा प्रणाली के माध्यम से वांछित मानव संसाधन तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्वविद्यालय ने कौशल विकास एवं कौशल प्रमाणीकरण के लिए सामुदायिक महाविद्यालय योजना को अंगीकृत किया है जिसके अन्तर्गत वर्तमान में ग्यारह महाविद्यालय संचालित हो रहे हैं,जिनसे कौशल विकास एवं कौशल प्रमाणीकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की जा सकेगी।

आने वाले वर्ष में विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के पच्चीस वर्ष पूर्ण करेगा। वर्ष 2014-15 का रजत जयन्ती वर्ष है। जिसमें शैक्षणिक,आध्यात्मिक एवं ग्रामीण विकास एवं कृषि से संबन्धित विभिन्न शिक्षा,शोध,प्रसार को जन-जन तक पहुंचाने हेतु गांव-गांव में कार्यक्रम निर्धारित कर ग्रामीण विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को सार्थक साबित करने में कोई कसर नही रखेगा। विश्वविद्यालय के इस यौवनकाल में आप अपनी प्रतिबद्धता और पुरूषार्थ से ऐसा स्थान अर्जित करेंगे,जिससे प्रदेश और राष्ट्र का गौरव बढ़े यही मेरी शुभकामनाएं हैं।

जय हिन्द।